2 सितम्बर 2014, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-32 / 2012-14

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे

जी-जागरण पर

प्रतिदिन प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 37, अंक : 11 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

सितम्बर (प्रथम), 2014 (वीर नि. संवत्-2540) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

फैडरेशन की शाखाओं से -

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन की सभी शाखाओं से अपेक्षा की जाती है कि वे पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 125वें जन्म जयन्ती वर्ष के उपलक्ष्य में प्रारम्भ की गई तत्त्वप्रचार की सबसे महत्वपूर्ण योजना 'आवो म्हारी साथे' को प्रभावी ढंग से लागू करने के सभी संभव उपाय करें -

इसके लिए क्या करें -

(अ) यदि आपकी शाखा में दैनिक स्वाध्याय की गतिविधि न चलती हो तो यह कार्य प्रथम प्राथमिकता से तुरंत प्रारम्भ करें -

यदि आपके नगर का विस्तार हुआ हो और कुछ लोगों के लिए स्वाध्याय भवन 2 या अधिक किलोमीटर से अधिक दूरी पर स्थित हो नए स्थान पर एक जगह और स्वाध्याय की गतिविधि प्रारम्भ की जाए, ताकि लोग अधिक दूरी के कारण इसका लाभ लेने से वंचित न हो जाएं।

(आ) यदि आपके यहाँ बालकों के लिए नियमित वीतराग विज्ञान पाठशाला का संचालन नहीं होता हो, नई पाठशाला प्रारम्भ करें।

(इ) घर-घर जाकर समाज के बंधुओं को व्यक्तिगत रूप से स्वाध्याय की गतिविधियों और पाठशाला से जुड़ने के लिए प्रेरित करें।

(ई) विभिन्न अवसरों और विशेषकर पर्वों के अवसर पर स्थानीय या आमंत्रित बाहरी विद्वानों के विशिष्ट विषयों पर व्याख्यानों का आयोजन किया जाए और व्यक्तिगत तौर से संपर्क करके नए-नए लोगों को इन व्याख्यानों में आमंत्रित किया जाए जिससे उन्हें वस्तु स्वरूप सुनने-समझने और अपनाने का अवसर मिल सके।

(उ) समय-समय पर अपने नगर के आसपास स्थित तीर्थ स्थलों या विशिष्ट स्थलों की यात्रा या पिकनिक के कार्यक्रमों का आयोजन किया जाए, जिनमें अधिक से अधिक संख्या में तत्त्वज्ञान से अपरिचित जैन बंधुओं को आमंत्रित कर सम्मिलित होने का अवसर प्रदान किया जाए और वहां स्थानीय या विशिष्ट आमंत्रित बाहरी विद्वान के प्रवचनों के आयोजन करके उन्हें आत्मकल्याणकारी वस्तु स्वरूप की बात सुनने का अवसर प्रदान किया जाए।

(ऊ) अपने मित्र वर्ग और व्यापार आदि के सम्पर्क के लोगों को सरल सत्साहित्य भेंटकर उसके पढने की प्रेरणा दी जाए। अवसर मिलने पर उनसे उक्त विषय पर चर्चा की जाए। यह कार्य उनमें तत्त्व की समझ विकसित करने में उपयोगी हो सकता है।

(ऋ) अन्यान्य अवसरों पर मित्रों और सम्बन्धियों को दी जाने वाली भेंट की वस्तुओं में सत्साहित्य और सरल आध्यात्मिक व्याख्यानों की सी.डी. जैसी वस्तुओं को शामिल किया जाए और अन्य लोगों को भी ऐसा करने की प्रेरणा दी जाए।

दशलक्षण में व्याख्यान हेतु पधारने वाले विद्वानों से अपील

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 125वें जन्मजयन्ती वर्ष के अवसर पर उनके द्वारा प्रकाशित तत्त्वज्ञान के और अधिक प्रभावशाली ढंग से प्रसार के लिए हम दशलक्षणपर्व में प्रवचन हेतु बाहर पधारने वाले विद्वानों से निम्न प्रकार से सहयोग की अपेक्षा करते हैं -

- वे यह सुनिश्चित करें कि वीतराग-विज्ञान पाठशाला नियमित रूप से चल रही है, वे उसका निरीक्षण भी करें और एक रिपोर्ट हमें भी भेज दें, जिसमें निम्नलिखित सूचनाएं हों -

(अ) अध्यापक का नाम

(आ) नियमित विद्यार्थियों की संख्या

(इ) पढाया जाने वाला विषय

(ई) दैनिक / साप्ताहिक

(उ) क्या विद्यार्थी परीक्षा में सम्मिलित होते हैं?

- क्या नियमित सामूहिक स्वाध्याय चलता है? इस संदर्भ में भी कृपया निम्नलिखित सूचनाएं प्रदान करें -

1. प्रवचनकार का नाम
2. नियमित श्रोताओं की संख्या
3. ग्रन्थ का नाम, जिस पर स्वाध्याय चल रहा है।

- क्या फैडरेशन की शाखा सक्रिय है?

1. अध्यक्ष और मंत्री का नाम, मोबा. नं. व ई-मेल आई.डी.
2. सदस्यों की संख्या
3. नियमित गतिविधियाँ ?

- पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन नियमित सुनने की प्रेरणा दें

- हम अपने विद्वानों से यह भी निवेदन करते हैं कि वे मुमुक्षु भाइयों को वीतराग विज्ञान (मासिक) और जैनपथप्रदर्शक (पाक्षिक) के ग्राहक बनने की प्रेरणा भी दें।

- सत्साहित्य बिक्री केन्द्र स्थापित करने की प्रेरणा दें। **- महामंत्री**

सम्पादकीय –

क्या मुक्ति का मार्ग इतना सहज है ?

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

'नाच न जाने आँगन टेड़ा' मुहावरे के मुताबिक – सामान्यजनों द्वारा अपनी भूल को स्वीकार न करके – अपने दोषों को दूसरों पर आरोपित करने की पुरानी परम्परा रही है। इसी परम्परा के अन्तर्गत जीवराज की भटकन को मोहनी के माथे मड़ा जाता रहा, जबकि जीवराज के जीवन में हुए उतार-चढ़ाव में मोहनी का कोई अपराध नहीं था; क्योंकि वह तो निमित्त मात्र थी। और परद्रव्य रूप निमित्तों को तो आगम में अकिंचित्कर कहा है; क्योंकि दो द्रव्यों के बीच अत्यन्ताभाव की बज्र की दीवाल खड़ी रहती है। एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का भला-बुरा कुछ भी नहीं करता, फिर भी मोहनी पर जो दोषारोपण किया गया, वह सर्वथा निराधार भी नहीं था; क्योंकि वह जीवराज के अपराध में सहचारी तो बनी ही थी। **लोक में दोषारोपण करने के लिए सहचारी होना ही पर्याप्त कारण होता है।** इस कारण लौकिक जनों द्वारा मोहनी पर कलंक का टीका लगना था सो लगता रहा।

इन मिथ्या आरोपों से त्रसित होकर कर्मकिशोर के सम्पूर्ण परिवार के प्रति सहानुभूति दिखाते हुए ज्ञानियों ने कहा है कि –

''कर्म विचारे कौन भूल तेरी अधिकाई।
अग्नि सहे धन घात, लोह की संगति पाई।।

जिस तरह लोहे का साथ देने मात्र से निर्दोष अग्नि को घन की चोटें सहनी पड़तीं हैं, इसीप्रकार हे अज्ञानी! भूल तो तेरी है, तू अज्ञान के कारण परद्रव्यों से राग-द्वेष करके कर्मों को आमंत्रित करता है, कर्मों के आस्रव का कारण बनता है और दोष कर्मों के माथे मढ़ता है। जबकि ये विचारे तो जड़ हैं, इस कारण कुछ जानते ही नहीं हैं। ऐसे निर्दोष कर्मों को अज्ञानी जीव का साथ देने मात्र से गालियाँ खानी पड़ती हैं।''

अज्ञानी की मनोवृत्ति को व्यक्त करते हुए आचार्यकल्प पण्डित टोडरमलजी ने मोक्षमार्गप्रकाशक में तो यहाँ तक लिखा है कि **'अज्ञानी जीव स्वयं तो महन्त रहना चाहता है और अपना दोष कर्मों के माथे मढ़ता है सो यह अनीति तो संभवै नाहीं।**[१]

एक दिन कर्मकिशोर ने सोचा – ''जीवराज पहले से बहुत कुछ बदला-बदला सा लगता है, उसने मोहनी का साथ तो छोड़ ही दिया और अपनी पूर्व पत्नी समताश्री को पुनः अपना लिया है। मोहनी की संतान अनुराग, हास्य, रति और माया आदि से भी सम्बन्ध विच्छेद का संकल्प करके पुत्र विराग और पुत्री ज्योति से स्नेह करने लगा है।

अब वह बहुत शान्त, सुखी और सदाचारी हो गया है। एक दिन उससे मिलकर मैं यह जानना चाहता हूँ कि जब वह बीमार था तब उसकी मनःस्थिति कैसी थी। वह अपनी भटकन के बारे में क्या सोचता था और अब उसकी भावी जीवन के प्रति क्या-कैसी योजना है? वह अपना शेष जीवन किस तरह जीना चाहता है?''

यह सब जानने के लिए कर्मकिशोर जीवराज के पास पहुँचा। यद्यपि जीवराज की भटकन में और बीमारी में कम-बड़ रूप से कर्मकिशोर के पूरे परिवार का निमित्तपना था; फिर भी उसने कर्मकिशोर के प्रति साम्यभाव रखा और उसका स्नेहपूर्वक स्वागत किया; क्योंकि अब उसे यह जानकारी हो गई थी कि कर्मकिशोर और इनके परिवार की कोई गल्ती नहीं है। मैं स्वयं ही अपनी भूल से भटका था और स्वयं ही अपनी भूल सुधार कर सही रास्ते पर आया हूँ। **(क्रमशः)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक पृष्ठ ३१२

घर-घर साहित्य हर घर साहित्य

मित्रों ! सुखी होने का एक ही उपाय है तत्त्वज्ञान, तत्त्वनिर्णय, तत्त्व को जीवन में उतारना और यह जिनवाणी के स्वाध्याय से ही संभव है। जन-जन तक जिनवाणी पहुंचे इससे अच्छा और क्या काम हो सकता है? इसलिए इस दशलक्षण पर्व में 'घर-घर साहित्य हर घर साहित्य' की मुहिम छेड़ी है। इस योजना के अंतर्गत लगभग 5 हजार रुपये का साहित्य और सी.डी. एक जिनमंदिर से लोगों के घरों तक पहुंचे, दस दिनों में मात्र 5 हजार रुपये का साहित्य अर्थात् 500 रुपये प्रतिदिन। क्या हम मिलकर 500 रुपये रोज के साहित्य को पुरस्कार या गिफ्ट के रूप में नहीं दे सकते ? जिससे जिनवाणी लोगों के घरों तक पहुंच जाए। महावीर की वाणी को चिरकाल तक जीवित रखने का यही उपाय है। हमारे जो भी विद्वान प्रवचन के लिए जा रहे हैं उनसे, समाज से और आपसे अनुरोध है कि आप अपने स्थान पर और जहाँ-जहाँ संभव हो वहाँ-वहाँ इस यज्ञ में सहयोग करें, लोगों को प्रेरित करें। आप अपने साहित्य का ऑर्डर **ptstjaipur@yahoo.com** पर या फोन 0141-2707458, 0141-4025580, 0141-2705581 या 09785643202 पीयूष जैन को भी दे सकते हैं। आप उपलब्ध साहित्य व सी.डी. का सूची पत्र भी मंगवा सकते हैं।

दोस्तों ! 'घर-घर साहित्य हर घर साहित्य' एक आन्दोलन है, मुहिम है, लहर है, क्रांति है और यह आपके सहयोग के बिना संभव नहीं है। **– महामंत्री**

श्री टोडरमल स्मारक भवन में संचालित तत्त्वप्रचार की गतिविधियों में आप निम्न प्रकार से सहयोग कर सकते हैं

1. पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के शिरोमणि संरक्षक, परमसंरक्षक, संरक्षक बनकर।[A]
2. आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों में आयोजन हेतु निम्न रूप से सहयोग किया जा सकता है –
   क. परम संरक्षक – 1 लाख रुपये[B] **ख.** संरक्षक – 25 हजार
   ग. शिविर के आमंत्रणकर्ता – 51 हजार **घ.** विधान के आमंत्रणकर्ता – 11 हजार[C]
3. विद्यालय में 1 छात्र के अध्ययन हेतु निम्न रूप से सहयोग प्रदान किया जा सकता है –
   क. 40 हजार प्रतिवर्ष (5 वर्ष तक) या 5 वर्ष के लिए एक साथ 2 लाख रुपये देकर।
   ख. 1 छात्र के आजीवन अध्ययन हेतु – एक मुश्त 5 लाख रुपये देकर।
   ग. आचार्य महाविद्यालय फण्ड एवं छात्र विकास फण्ड में कोई भी राशि देकर।
4. जी–जागरण पर प्रतिदिन डॉ. हुकमचंद भारिल्ल के व्याख्यान प्रात: 6.30 से 7.00 बजे तक आते हैं। उनके प्रसारण हेतु 6000/– रुपये प्रतिदिन के हिसाब से 1 लाख 80 हजार प्रतिमाह व्यय होते हैं। कम से कम 10 दिन की स्वीकृति देकर तत्त्वज्ञान के प्रचार में सहयोग प्रदान कर सकते हैं। दातार का नाम सहयोगी के रूप में टी.वी. पर व्याख्यान के पहले और बाद में दिया जाएगा।
5. भोजनशाला के संचालन एवं विकास हेतु निम्न रूप से सहयोग प्रदान किया जा सकता है –
   क. एक भोजन तिथि के रूप में 21000/– रुपये की राशि देकर। **ख.** एक दिन का भोजन सहयोग – 15 हजार रुपये।
   ग. एक समय का मिष्ठान्न भोजन सहयोग – 11 हजार रुपये। **घ.** एक समय का भोजन सहयोग – 6100/– रुपये।
   च. एक समय के नाश्ते हेतु – 2100/– रुपये। **छ.** टेबिल–कुर्सी (एक सेट) का सहयोग – 7500/– रुपये।
   ज. भोजन सहयोग हेतु कोई भी राशि/सामग्री/उपकरण देकर सहयोग किया जा सकता है।
6. सत्साहित्य प्रकाशन हेतु निम्न रूप से सहयोग प्रदान किया जा सकता है –
   क. 'साहित्य की कीमत करने में' अनुदान देकर। **ख.** साहित्य प्रकाशन ध्रुवफण्ड में कोई भी राशि देकर।
   ग. ग्रन्थमाला के सदस्य के रूप में 1500/– रुपये देकर।
   घ. आपकी ओर से सत्साहित्य के नि:शुल्क वितरण हेतु सहयोग देकर।
7. **क.** मंदिर पूजन में स्थायी पूजन फण्ड हेतु पूजन तिथि के रूप में 1100/– रुपये की राशि देकर।
   ख. मंदिर की सामग्री (टेबिल/पाटा/अलमारी/द्रव्य....) के लिए कोई भी राशि देकर।
8. वीतराग–विज्ञान मासिक पत्रिका के प्रकाशन में निम्न रूप में अनुदान देकर सहयोग प्रदान किया जा सकता है –
   क. संरक्षक –21 हजार, **ख.** परम सहायक – 11 हजार, **ग.** सहायक – 5100/–
   घ. विशिष्ट सहायक – 1100/– **च.** 1 अंक का प्रकाशन सहयोग – 11 हजार[D]
9. जैनपथप्रदर्शक समाचार–पत्र में अपने धार्मिक आयोजनों का विज्ञापन देकर अथवा संरक्षक के रूप में 11 हजार की राशि देकर या 1 अंक के प्रकाशन हेतु 5100/– रुपये की राशि देकर।
10. रात्रिकालीन पाठशालाओं के संचालन हेतु 6 हजार रुपये (प्रति पाठशाला के हिसाब से) वार्षिक देकर सहयोग प्रदान किया जा सकता है।

A. दातार का नाम प्रवचन मण्डप के पास बने सूचना पट्ट पर लिखा जायेगा। **B.** दातार का नाम शिविर की पत्रिका में आजीवन 'शिविर के परमसंरक्षक' के रूप में प्रकाशित होता रहेगा। **C.** दातार का नाम शिविर की पत्रिका में शिविर/विधान के आमंत्रणकर्ता 'संरक्षक' के रूप में प्रकाशित किया जायेगा। **D.** दातार का नाम पत्रिका के 1 अंक में छापा जायेगा।

–: स्वीकृति पत्र :–

मैं .....योजना हेतु .....रुपये की राशि एकमुश्त/.....वर्षों तक देने हेतु स्वीकृति प्रदान करता हूँ।

नाम .....पता .....

.....मोबाईल .....ई–मेल..... हस्ताक्षर दातार

नोट :– आप अपनी दानराशि 'पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट' के नाम से चैक/ड्राफ्ट/मनीऑर्डर द्वारा ए–4, बापूनगर, जयपुर–302015 जयपुर कार्यालय के पते पर अथवा पंजाब नेशनल बैंक के खाता संख्या 0247000100024619 **IFS Code PUNB0024700** में ऑन लाइन भी जमा करा सकते हैं। आप जो भी राशि बैंक में जमा करावे उसकी सूचना जयपुर कार्यालय को अवश्य भेजें ताकि उसका जमा/खर्च कर रसीद भेजी जा सके।

– दशलक्षण पर्व के अवसर पर पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को दान राशि भेजने हेतु अनेक साधर्मीभाई जयपुर कार्यालय में फोन कर जानकारी मांगते हैं, अत: सभी की सुविधा हेतु निम्न जानकारी प्रकाशित की जा रही है। **– प्रबन्ध सम्पादक**

दृष्टि का विषय

2 प्रथम प्रवचन –डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

केवलज्ञानी को स्व और पर दोनों ही पदार्थ एक साथ प्रत्यक्ष हैं, प्रत्यक्ष में भी सकल प्रत्यक्ष हैं। **सर्वविशुद्धज्ञान अधिकार में आचार्यदेव ने इस बात पर बहुत वजन दिया है कि वे पदार्थ चाहे समीपवर्ती हों, चाहे दूरवर्ती हों; ज्ञान, उनको एक साथ व एक जैसा ही जानता है।**

स्वामीजी ने भी इसी बात का स्पष्टीकरण करते हुए कहा है कि कोई व्यक्ति यदि ऐसा समझे कि सुमेरु पर्वत तो बहुत दूर है तथा कोई पदार्थ उनके बिल्कुल पास में है; तो वे केवली भगवान सुमेरु पर्वत को देर से जानते होंगे और समीपवर्ती पदार्थ को जल्दी से जान लेते होंगे।

इसीप्रकार दूर का पदार्थ धुंधला दिखता होगा और पास का पदार्थ बिल्कुल साफ दिखता होगा – ऐसा समीपता और असमीपता संबंधी अंतर तो केवली भगवान के है ही नहीं।

केवलज्ञान के समान ही श्रुतज्ञान में भी समीपता और असमीपता संबंधी कोई अंतर नहीं है।

केवली भगवान का पर को जानना व्यवहार है और स्व को जानना निश्चय है – यह तो हमने अपने ज्ञान में लगाया है, उनके ज्ञान में तो नय हैं ही नहीं।

निश्चय-व्यवहारनयों की परिभाषा में आचार्यों ने यह बात कही है कि **स्वाश्रितो निश्चय:** और **पराश्रितो व्यवहार: –** स्वाश्रित कथन निश्चय है और पराश्रित कथन व्यवहार है।

यहाँ आश्रय का मतलब यह नहीं है कि केवली भगवान को परज्ञेयों का आश्रय लेना पड़ता है, इसलिए व्यवहारनय है; अपितु **पर-पदार्थरूप ज्ञेय जानने में आते हैं, इसका नाम पराश्रय है। पर को जानने मात्र के कारण व्यवहार कहा जाता है।**

केवली भगवान अपने आत्मा को 'यह मैं हूँ' – ऐसा जानते हैं, इसलिए निश्चयनय कहा और परपदार्थ 'मुझसे भिन्न है, ये मैं नहीं हूँ' – ऐसा जानते हैं – इसका नाम व्यवहार है।

व्यवहार नाम इसलिए नहीं दिया कि केवली भगवान परपदार्थों को नहीं जानते और हम उन्हें परपदार्थों को जाननेवाला कह रहे हैं।

'परमात्मप्रकाश' में भी कहा है कि वे परपदार्थों को तन्मय होकर नहीं जानते हैं।

यहाँ 'तन्मय होकर जानने' का अर्थ उपयोग की एकाग्रता नहीं है; किन्तु लोक में तो 'तन्मय' शब्द का प्रयोग उपयोग की एकाग्रता के अर्थ में ही किया जाता है। इसका प्रयोग करते हुए लोग कहते हैं कि जो तन्मय होकर काम करेगा, उसे सफलता जरूर मिलेगी।

केवली भगवान के साथ इसप्रकार के दो भेद हो ही नहीं सकते। कोई कहे कि केवली भगवान के उपयोग में भी अस्थिरता रहती होगी, जिससे वे तन्मय होकर नहीं जानते होंगे ? अरे भाई ! केवली के ऐसा नहीं होता। यह दोष हमारे और तुम्हारे ज्ञान में तो हो सकता है; किन्तु केवली भगवान के ज्ञान में नहीं। केवली भगवान से हम यह शिकायत नहीं कर सकते कि उन्होंने परपदार्थों को मन लगाकर नहीं देखा होगा। यह शिकायत किसी डॉक्टर से तो कर सकते हैं कि लम्बी-लम्बी लाईन (कतार) होने के कारण उन्होंने ध्यान नहीं दिया, पर केवली भगवान से ऐसी शिकायत नहीं की जा सकती है।

इसलिए यहाँ 'तन्मय' का अर्थ उपयोग की एकाग्रता नहीं है। 'तन्मय होना' यहाँ यह श्रद्धा गुण की बात है। 'ये मैं हूँ' – ऐसी बुद्धि का नाम है – तन्मय होना। केवली भगवान अपनी आत्मा को ऐसा जानते हैं कि 'यह मैं हूँ' इसी का नाम है तन्मय होना। तन्+मय अर्थात् मैं उसी रूप हूँ।

घड़ा मिट्टीमय है, इसका नाम है 'घड़ा' मिट्टी से तन्मय है और कुम्हार से तन्मय नहीं अथवा मिट्टी घड़े से तन्मय है और कुम्हार घड़े से तन्मय नहीं है। 'तन्मय' अर्थात् मिट्टी स्वयं घड़ेरूप परिणमित हुई है, घड़े के रोम-रोम में मिट्टी समाई हुई है।

इसीप्रकार केवली भगवान को भी स्वयं के त्रिकालीध्रुव भगवान आत्मा के बारे में ''यह ही मैं हूँ'' इस दृढ़ता के साथ जो प्रतीति है, उसी का नाम है तन्मय होना और पर के प्रति जो दृढ़ता से विश्वास है कि ''यह मैं नहीं हूँ'' इसी का नाम है अतन्मय होना। (क्रमश:)

सिद्धचक्र मण्डल विधान संपन्न

बण्डा-सागर (म.प्र.) : यहाँ श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट के तत्त्वावधान में दिनांक 13 से 20 अगस्त तक गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के 125वीं जन्म जयंती वर्ष के अवसर पर श्री सिद्धचक्र मण्डल विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित गुलाबचंदजी बीना, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली, ब्र.नन्हे भैया सागर के प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही अनेक स्थानीय विद्वानों का भी समागम प्राप्त हुआ।

विधि-विधान के समस्त कार्य ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के निर्देशन में संपन्न हुये।

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन क्या, क्यों और कैसे –
शृंखला की पांचवीं कड़ी –

सफल जीवन जीने की कला सीखने हेतु फैडरेशन में शामिल हों !

– परमात्म प्रकाश भारिल्ल
(महामंत्री–अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन)

जिस प्रकार हम अपने आज का प्लान आज ही करते हैं, बहुत पहले नहीं कर पाते हैं पर अपने जीवन का प्लान बचपन से ही करना प्रारम्भ कर देते हैं, अभी से कर लेते हैं, क्योकि हम अपने जीवन के बारे में अनिश्चितता नहीं चाहते हैं, तो क्या यह उचित नहीं होगा कि हम अपने इस जीवन का प्लान करने से पहले अपने इस जीवन के बाद का भी प्लान कर लें ? तब हमारा यह जीवन हमारे इस जीवन के बाद के जीवन की रूपरेखा तय करने वाला होगा, क्या हमें अपने जीवन के बाद के बारे में भी निश्चिंतता नहीं चाहिए?

जिसप्रकार हम अपने जीवन के बारे में प्लान कर लेने के बाद जीवन के बारे में निश्चिंत हो जाते हैं, जीवन के बाद के बारे में प्लान कर लेने के बाद हम उसके लिए भी निश्चिंत हो सकते हैं, तब हमें मृत्यु का भय भी नहीं रहेगा।

क्यों रहे आखिर ? हम तैयार जो हैं।

जब हम अपने जीवन के बारे में प्लानिंग कर चुके होते हैं तो उसके अनुसार हमारी आज की प्लानिंग बदल जाती है, जैसे कि यदि हमें आगामी जीवन में कोई प्रोफेशनल बनना है तो हम अपने आज का उपयोग अध्ययन करने में करते हैं, उसे व्यर्थ की मौज–मस्ती में बर्बाद नहीं करते।

यदि हमें अपने आने वाले कल के दिन एक सफल खिलाड़ी बनना है तो हम अपने आज का उपयोग खेल की प्रेक्टिस और फिजीकल फिटनेस बनाए रखने में करते हैं, उसी प्रकार यदि हम अपने आगामी जीवन के बारे में सुनिश्चित होंगे तो हमारे इस जीवन की प्लानिंग भी बदल जायेगी, तब हमारे इस जीवन की गतिविधियाँ संसार बढाने वाली नहीं, संसार काटने वाली होगी।

आपको स्वयं अनुभव है कि हम अपने इस जीवन के बारे में आसानी से सफलता पूर्वक प्लानिंग कर पाते हैं, क्यों ?

क्योंकि हम स्वयं भी अपने इस जीवन के बारे में बहुत कुछ जानते हैं क्योंकि हमें अपने जन्म से ही आज तक प्रतिदिन, प्रतिपल ही कदम–कदम पर इस जीवन के बारे में बहुत कुछ सिखाया गया है।

पर अपने इस जीवन के बाद के जीवन के बारे में यह बात नहीं है, उसके बारे में तो हमें किसी ने बतलाया ही नहीं है, इसके बारे में तो कोई चर्चा ही नहीं करता है।

दरअसल कोई इसके बारे में चर्चा करना पसंद ही नहीं करता है, कोई इस बारे में सोचना ही नहीं चाहता है।

आप क्या सोचते हैं ? क्या आपको नहीं लगता है कि जब हमें अपने इस जीवन के बाद के जीवन की प्लानिंग भी अभी करनी है, पहिले ही करनी है तो हमें उसके बारे में पर्याप्त जानकारी भी अभी करनी ही होगी।

कौन देगा हमें यह सब जानकारी ?

बेशक वही लोग जो इसके बारे में जानते हैं, सोचते हैं, इस बारे में सतर्क हैं।

कौन हैं वे लोग और कहाँ पाए जाते हैं ?

अरे ये वही लोग तो हैं जो आत्मा और अध्यात्म के बारे में चर्चा करते हैं, ऐसे लोग धार्मिक रुचि के लोग कहलाते हैं और अक्सर मंदिरों और स्वाध्याय भवनों में या इनके इर्दगिर्द पाए जाते हैं।

तो क्या हमें ऐसे लोगों की संगति नहीं करनी चाहिए ? उनके साथ नहीं रहना चाहिए ?

कैसे संभव है यह सब ?

यह संभव है जब हम उनके सामाजिक संगठनों में शामिल हों, उनके कार्यक्रमों में शामिल हों, उनके साथ दोस्ती बढायें, उनसे चर्चा–वार्ता करें।

जी हाँ ! अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन ऐसे आत्मार्थियों का ऐसा ही संगठन है जो कि अपना यह जीवन तो सात्विक, वैभवशाली, सुरुचिपूर्ण और गरिमामय ढंग से जीते ही हैं। साथ ही अपने अनादि–अनंत आत्मा के बारे में भी उतने ही सतर्क हैं, उसके बारे में अध्ययन करते हैं, चर्चा करते हैं और अपने आगामी अनंतकाल तक के लिए निश्चिंत रहते हैं।

और हाँ ! यहाँ आपको यह सब कुछ अकेले ही नहीं करना है, मात्र अपने बलबूते ही नहीं करना है।

यहाँ हमें यह मार्ग बतलाने वाली जिनवाणी उपलब्ध है, उस जिनवाणी का मर्म बतलाने वाले प्रवक्ता उपलब्ध हैं, हमें उक्त मार्ग पर चलने के लिए सहचारी उपलब्ध है, ऐसे सहचारी जो हमें कहीं अटकने नहीं देंगे, भटकने नहीं देंगे।

यहाँ –

– आत्मा–परमात्मा के बारे में प्राथमिक शिक्षा के लिए श्री वीतराग–विज्ञान पाठशालाओं का संचालन किया जाता है।

– आत्मा के बारे में गहन अध्ययन के लिए स्वाध्याय की गतिविधियाँ संचालित होती है।

– अपनी शंकाओं के समाधान के लिए शंका–समाधान के कार्यक्रम भी होते हैं।

– यहाँ स्वाध्याय के लिए सत्साहित्य भी उपलब्ध है।

– समय–समय पर शिविरों का आयोजन भी होता है, जहां अनेकानेक विद्वानों का समागम प्राप्त होता है और कम से कम समय में अधिक से अधिक ज्ञान और जानकारी प्राप्त करने का अवसर प्राप्त होता है।

तब फिर देर किसलिए ?

आइये ! अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन में शामिल होइये, सफल जीवन जीने और संसार काटने के उपक्रम प्रारम्भ करने के लिए।

(क्रमशः)

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के संबंध में उनके समकालीन मनीषियों द्वारा व्यक्त किये गये हृदयोद्‌गार –

अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी : कानजीस्वामी

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे)

कुछ दिनों तक वे सोनगढ के समीप टेकड़ी पर स्थित एक अनन्य अनुयायी के टूटे-फूटे मकान में रहे, जो आज भी उसी हालत में विद्यमान है और जिसे गुरुदेव स्वयं कभी-कभी अपने अनुयायियों को बड़े ही प्रेम से उंगली के ईशारे से दिखाया करते हैं।

साम्प्रदायिकता के मोह में हो गये विरोधियों की कषाय जब शान्त होने लगी तो वे पुण्य और पवित्रता के धनी गुरुदेव के दर्शनार्थ झुंड के झुंड आने लगे। कुछ यह देखने भी आते थे कि अब कैसा क्या चल रहा है? पर उनके समक्ष आकर, उनके आचरण व व्यवहार को देख एवं अभूतपूर्व प्रवचनों को सुनकर नत-मस्तक हुए बिना नहीं रहते।

कुछ समय बाद जन्मजात दिगम्बर जैन भी उनके पास पहुंचने लगे। कुछ प्रेम से, कुछ भक्ति से, कुछ कुतूहल से; पर जो भी उनके पास पहुँचता, उनका हुए बिना नहीं रहता, उनके अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व से प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। उनकी वाणी में तो कुन्दकुन्द के अमृत का जादू है ही, पर उनका बाह्य व्यक्तित्व भी कम आकर्षक नहीं है।

उनके इस आध्यात्मिक आकर्षण से विरोधी खेमों में खलबली सी मच गई जो आज भी देखी जा सकती है। 'जो वहाँ जाएगा, उनका हो जायगा' इस भय से आशंकित और आतंकित होकर वहाँ न जाने की लोगों को प्रतिज्ञाएँ दिलाई जाने लगीं, पर तूफान को कौन रोक सकता है? अगर गायक कवि 'युगल' की ''लो रोको तूफान चला रे, पाखण्डों के महल ढहाता, लो रोको तूफान चला रे।''- यह पंक्तियाँ आज भी चुनौती दे रही है।

आध्यात्मिक क्रान्ति का यह सूत्रधार आज जहाँ भी जाता है, विरोधी भी उसका स्वागत करते हैं, सम्मान करते हैं, अभिनन्दन करते हैं। चार-चार बार सम्पूर्ण भारत की ससंघ यात्राएँ की हैं इस महापुरुष ने। पचास से अधिक विशाल जिन-मंदिरों का निर्माण हुआ है, इसकी पावन प्रेरणा से। बीस लाख से ऊपर साहित्य भी प्रकाशित हुआ है इसकी कृपा से। गाँव-गाँव में तत्त्वचर्चा के केन्द्र स्थापित हो गये हैं। छोटे-छोटे से गाँवों में आप सामान्य व्यापारियों को निश्चय-व्यवहार, निमित्त-उपादान की चर्चा करते पायेंगे। यह सब इस महामानव का ही प्रभाव है कि जिसने आज के इस भौतिकवादी युग में आध्यात्मिक वातावरण बना दिया है।

वे इस युग के अद्वितीय महापुरुष है। ऐसा कोई दूसरा महापुरुष बताएँ, जिसने इनके समान अनंत प्रशंसाओं और निन्दाओं का आज तक उत्तर भी न दिया हो और जो जगत की प्रशंसा और निन्दा से इनके समान अप्रभावित रहकर अपनी गति से ही चलता रह हो, जिसने समय (शुद्धात्मा) और समय (टाइम) की ऐसी साधना की हो और लोग जिसकी दिनचर्या से अपनी घड़ियाँ मिला लेते हों।

उस अन्तर्बाह्य व्यक्तित्व के धनी एवं आध्यात्मिक साधनारत महापुरुष को शत-शत प्रणाम। ●

इन्टरनेट से संस्कृत कक्षा प्रारंभ

मोना **(MONA)** एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के संयुक्त तत्त्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर टेलिफोन व इन्टरनेट के माध्यम से संस्कृत कक्षायें प्रारंभ की जा रही हैं।

संस्कृत के प्रचार-प्रसार हेतु तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का दिल्ली में हुए सम्मान से प्रेरणा पाकर मोना **(MONA)** ने हर शनिवार 20 मिनिट के लिए विश्वभर के मुमुक्षुओं के लाभार्थ संस्कृत की कक्षाओं का आयोजन किया जा रहा है। समय - भारत में रात्रि 9 बजे, न्यूयार्क में प्रात: 11.30 बजे, लंदन में दोपहर 4.30 बजे एवं नैरोबी में सायं 6.30 बजे।

इन कक्षाओं का उद्‌घाटन डॉ. भारिल्ल द्वारा दिनांक 13 सितम्बर को किया जायेगा। कक्षाओं का संचालन विदुषी प्रतीति पाटील सुपुत्री पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर करेंगी। कक्षा का लाभ लेने हेतु आप भारत या विदेश से फ्लेश फोन से कॉन्फ्रेन्स द्वारा टेलिफोन नं. (यू.एस.ए.) 712-432-0075, कोड -307701# डायल करें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें– वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 28 अगस्त 2014

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127